ISSN 2454 - 5163

26 मार्च 2022, मूल्य 2 रुपये, वर्ष 40, अंक 09, कुल पृष्ठ 36

वीतराग-विज्ञान

(पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का मुखपत्र)

सम्पादक :

डॉ. हुकमचंद भारिल्ल

श्री 1008 आदिनाथ कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन मन्दिर,
राघोगढ़, जिला – गुना (म.प्र.)

वीतराग-विज्ञान (464)

हिन्दी, मराठी व कन्नड़ भाषा में प्रकाशित

जैनसमाज का सर्वाधिक बिक्रीवाला आध्यात्मिक मासिक

सम्पादक :
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

सह-सम्पादक :
डॉ. संजीवकुमार गोधा

प्रकाशक एवं मुद्रक :
ब्र. यशपाल जैन द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि., जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पर्क-सूत्र :
पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015
फोन :(0141)2705581, 2707458
व्हाट्सऐप नं. : 7412078704
E-mail : veetragvigyanjpp@gmail.com

ISSN 2454 - 5163

शुल्क :

आजीवन	:	251 रुपये
वार्षिक	:	25 रुपये
एक प्रति	:	2 रुपये

मुद्रण संख्या :

हिन्दी	:	7000
मराठी	:	2000
कन्नड़	:	1000
कुल	:	**10000**

प्रथमानुयोग का प्रयोजन

देखो, सम्पूर्ण जिनागम को चार शैलियों में प्रतिपादित किया गया है, जिन्हें चार अनुयोग कहा जाता है। वे हैं द्रव्यानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग और प्रथमानुयोग। सम्पूर्ण पौराणिक कथानक प्रथमानुयोग की शैली में लिखे गये हैं।

प्रथमानुयोग में केवल प्रयोजन की मुख्यता से कथन होता है। इस प्रकरण में केवल इतना प्रयोजन है कि जो लौकिक कामनाओं की पूर्ति के लिए अन्यमत-मतान्तरों द्वारा पीर-पैगम्बर या रागी-द्वेषी व अल्पज्ञ देवी-देवताओं की शरण में चले जाते हैं। वे वहाँ जाकर गृहीत मिथ्यात्व में न पड़ें, णमोकार मंत्र द्वारा पंच परमेष्ठी का स्वरूप पहचान कर वीतराग सर्वज्ञ परमात्मा व उन्हीं के पथानुगामी साधुओं की शरण में आएँ, ताकि वे गृहीत मिथ्यात्व के महापाप से बच सकें और सच्ची बात समझने के निमित्तों से दूर न हो जावें।

– अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का, घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : ४० (वीर नि. संवत् २५४८) ४६४/अंक : ८

धनि ते साधु रहत...

धनि ते साधु रहत वनमाहीं ।। टेक ।।
शत्रु-मित्र सुख-दुख सम जानैं, दरसन देखत पाप पलाहीं।।
धनि ते साधु रहत वनमाहीं...।। १ ।।

अट्ठाईस मूलगुण धारें, मन-वच-काय चपलता नाहीं।
ग्रीषम शैल-शिखा हिम तटिनी, पावस बरखा अधिक सहाहीं।।
धनि ते साधु रहत वनमाहीं...।। २ ।।

क्रोध-मान-छल-लोभ न जानैं, राग-दोष नाहीं उन पाहीं।
अमल अखण्डित चिद्गुण मण्डित, ब्रह्मज्ञान में लीन रहाहीं।।
धनि ते साधु रहत वनमाहीं...।। ३ ।।

तेई साधु लहैं केवल पद, आठ काठ दह शिवपुर जाहीं।
'द्यानत' भवि तिनके गुण गावैं, पावैं शिवसुख दुःख नसाहीं।।
धनि ते साधु रहत वनमाहीं...।। ४ ।।

– कविवर पण्डित द्यानतरायजी

दो वर्ष की प्रतीक्षा के पश्चात्

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित एवं
पूज्य कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, देवलाली द्वारा आयोजित

54वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर

दिनांक : रविवार 15 मई से बुधवार 1 जून 2022 तक

शिविर के मुख्य आकर्षण

- सी.डी. के माध्यम से पूज्य गुरुदेवश्री के प्रवचन
- वृहद् विद्वत्समागम
- प्रौढ़ एवं बाल शिक्षण कक्षायें
- प्रतिदिन रोचक व ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रम
- पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद का सम्मेलन
- प्रतिदिन डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचन
- जैनधर्म का अध्यापन करने वाले शिक्षकों का प्रशिक्षण
- प्रतिदिन सामूहिक जिनेन्द्र पूजन, विधान एवं भक्ति
- डॉ. हुकमचन्दजी के जन्मदिवस पर तत्त्वज्ञान का संकल्प
- टोडरमल आदि महाविद्यालय में प्रवेश हेतु अपूर्व अवसर

आप सभी को शिविर में पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण

स्थान –
कहान नगर, लाम रोड़, देवलाली, नासिक (महाराष्ट्र)

सम्पर्क सूत्र – श्री टोडरमल स्मारक भवन ए–४, बापूनगर जयपुर–३०२०१५ (राजस्थान)
फोन : 0141 - 2705581, 2707458

नोट – कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी आगामी अंक में शीघ्र प्रकाशित की जाएगी।

सम्पादकीय

(गतांक से आगे....)

भरत का अन्तर्द्वन्द्व : नाटक

तीसरा अंक

पहला दृश्य

(महातपस्वी मुनिराज श्री बाहुबलि को केवलज्ञान हो गया है। उनके दर्शनार्थ सम्राट भरत आये हैं। अत्यन्त विनयपूर्वक नमस्कार कर भरतजी श्री बाहुबलि भगवान की स्तुति करने लगते हैं।)

सम्राट भरत – ''हे भगवान् बाहुबलिजी! आप तो पौरुष के पिण्ड हैं। भगवान श्री ऋषभदेव को तो दीक्षा लेने के बाद केवलज्ञान प्राप्त करने में एक हजार वर्ष लग गये थे; पर आपने तो एक वर्ष में ही केवलज्ञान की प्राप्ति करली। आपको सौ-सौ बार नमस्कार हो।

हम भी अतिशीघ्र आपके रास्ते पर आना चाहते हैं; क्योंकि हमें भी शीघ्र ही इस संसार सागर से पार उतरना है।

केवलज्ञान प्राप्त करने की आपकी काललब्धि आ गई थी और पुरुषार्थ भी जागृत हो गया। पाँचों समवाय उपस्थित थे।

यद्यपि हम भी चाहते हैं कि हमारा काल भी शीघ्र आवे, पर हमारे चाहने से क्या होता है? काम तो तभी होगा, जब पाँचों समवाय उपस्थित होंगे।

अभी हमारी होनहार तो गृहस्थी में उलझे रहने की ही है।

यद्यपि हमने आपको बहुत रोका, पर आप कैसे रुक सकते थे; क्योंकि आपकी दीक्षा लेने की काललब्धि आ चुकी थी, आपको एक वर्ष में ही केवलज्ञान होना था। काल बहुत बलवान है।

राजकुमार अर्ककीर्ति – हे पूज्य पिताश्री! केवलज्ञानी भगवान ऋषभदेव तो यह सब जानते हैं उन्होंने यह सब क्यों नहीं बताया?

सम्राट भरत – हे पुत्र अर्ककीर्ति! यद्यपि केवलज्ञानी भगवान ऋषभदेव यह सब जानते हैं; पर वे तो पूर्ण वीतरागी हैं। वे तो ज्ञाता-दृष्टा भाव में ही हैं। उन्हें किसी को कुछ बतलाने का कोई विकल्प नहीं है।

वे प्रभावित हुये बिना ही जानते हैं और जानकर भी अप्रभावित रहते हैं। केवलज्ञानियों का स्वरूप ही ऐसा होता है। हे बाहुबलि जिनराज! आप भी आज ऐसे केवलज्ञानी भगवान हो गये हैं।

राजकुमार अर्ककीर्ति – हे पिताजी! बाहुबलिजी तो आपके छोटे भाई हैं न?

सम्राट भरत – सुनो पुत्र! शांति से सुनो (भगवान बाहुबलि की ओर उन्मुख होकर)

हे प्रभो! आज आप मेरे भाई नहीं, भगवान हो और मैं आपका भगत हूँ। आज आपने जो प्राप्त किया है, मुझे भी अतिशीघ्र वही पाना है। आप आज के भगवान हो और मैं कल का भगवान हूँ।

आपके बारे में यह दुनियाँ न जाने कैसे-कैसे विकल्प किया करती है; आपको कर्त्ता-धर्त्ता कहती है, और न जाने आपसे क्या-क्या माँगा करती है। लोग यह नहीं जानते कि आप जगत के कर्त्ता-धर्त्ता नहीं हैं

और किसी को कुछ लेते-देते भी नहीं हैं। आप तो सहज ज्ञाता-दृष्टा हैं।

आप तो जगत से यही कहते हैं कि स्वयं को जानो, जानते रहो; और उसी में जम जावो, रम जावो। अनन्त सुखी होने का एकमात्र यही उपाय है।

अरे भाई! जानो नहीं, जानना सहज होने दो। जानने का तनाव मत करो; करने-धरने का बोझा अपने माथे से उतारो और सहज हो जावो, एकदम सहज; सहजता ही जीवन का आनन्द है। जानने के विकल्प से भी पार, निर्भार हो जावो।

यदि तुम्हें भगवान बनना है तो भगवान जैसे ही निर्भार हो जावो, निर्ग्रन्थ हो जावो; क्योंकि मुक्ति का पंथ यही है। इससे ही भव का अन्त आयेगा, अनन्तानन्द आयेगा। ज्ञान-दर्शन भी अनन्त हो जायेंगे और वीर्य भी अनन्त हो जायेगा; अनन्त चतुष्टय प्रगट हो जायेंगे।

अधिक क्या कहें? - यदि ऐसा किया तो अनन्तकाल तक अनन्त आनन्द भोगेंगे।

हे भगवान बाहुबलि! आपने जगत को यही समझाया है और मुझे भी आपका यही उपदेश सबसे अधिक पसंद आया है।

(कहते-कहते भरत उनके चरणों में झुक गये।)

सम्राट भरत – हे भगवन्! मैं तो यही समझता हूँ कि उक्त सभी घटनाचक्र भी पूर्व सुनिश्चित था और हम सब भी उसी के अनुसार प्रकृति से ही संचालित थे। जो कुछ होना था, वही सबकुछ सहज भाव से ही हुआ है।

और जो आगे होना है, वह सब भी नक्की है। इसमें कुछ भी संशय नहीं है। बात एकदम पक्की है। अतः कुछ भी विकल्प करना व्यर्थ है। हमें किसी

उलझन में नहीं पड़ना है। हमें तो सुलझना ही है।

यद्यपि राज-काज के कामों में मेरा मन नहीं लगता; पर जब तक घर में हूँ, तब तक तो करने ही होंगे। अधिक आकुलता करने से कोई लाभ नहीं है। सभी काम सहज भाव से स्वसमय में ही होंगे।

जल्दी करने की बात मेरी समझ में नहीं आती। आकुलता करने से क्या होता है। सभी काम समय पर ही होते हैं। यही बात आपने कही है।

(नेपथ्य में मंदस्वर में निम्नांकित गीत चल रहा था।)

(रेखता)

आपको नमस्कार शतबार आपको वन्दन शत शत बार।
अरे हे जिनवर बाहूबली! आपको वन्दन बारम्बार ॥
आपके मारग पर हे प्रभो! हमें भी आना है अतिशीघ्र ।
अरे इस भवसागर का पार हमें भी पाना है अतिशीघ्र ॥ 1 ॥

हमारा भी स्वभाव तो नाथ! आपके जैसा ही है प्रभो!।
हमारी होनहार भी नाथ! आपके जैसी ही हो विभो!॥
हमारा काल शीघ्र आवे और पुरुषार्थ जगे जल्दी।
हमारा काल नहीं आया इसलिये घर में उलझे रहे ॥ 2 ॥

यद्यपि हमने रोका बहुत आप कैसे रुक सकते थे?।
आपके दीक्षा लेने की काललब्धि आ पहुँची थी ॥
आपको एक वर्ष में ही प्रभो! होना था केवलज्ञान ।
आप कैसे रुक सकते थे? काल है स्वयं बहुत बलवान ॥ 3 ॥

आप बतलाते हैं जग को स्वयं को जानो उसमें जमो।
स्वयं में ही अनन्त सुख है इसलिये स्वयं स्वयं में रमो।।
स्वयं को जानो, जानो नहीं; जानना होने दो तुम सहज।
जानने का तनाव मत करो जानना होने दो तुम सहज।। 4।।

सहजता जीवन का आनन्द यही है परमागम का पन्थ।
चलो तुम परमागम के पन्थ शीघ्र आवेगा भव का अन्त।।
शीघ्र आवेगा भव का अन्त प्रगट होगा आनन्द अनन्त।
ज्ञान-दर्शन भी होंगे नन्त वीर्य भी होगा अरे अनन्त।। 5।।

अनन्तानन्द अनन्तानन्द अनन्तानन्द अनन्तानन्द।
अनन्तानन्द अनन्तानन्द अरे भोगोगे काल अनन्त।।
प्रभो हे बाहूबली जिनेश! आपने जग को समझाया।
आपका यही दिव्य उपदेश मुझे भी अन्तर से भाया।। 6।।

यद्यपि राज-काज के कामों में मेरा मन लगता नहीं।
तदपि मैं जबतक घर में हूँ तबतलक करने ही होंगे।।
अरे कुछ लाभ नहीं भगवन अधिक आकुलता करने से।
अरे सब काम समय पर सहज भाव से यथायोग्य होंगे।। 7।।

अरे जल्दी करने की बात समझ में मुझको आती नहीं।
क्योंकि सब काम समय पर ही अरे होते रहते हैं सदा।।
व्यर्थ की आकुलता क्यों करें समय के पहले होगा नहीं।
समय पर ही होंगे सब काम बात यह जिनवर ने है कही।। 8।।[1]

पटाक्षेप

1. भरत का अन्तर्द्वन्द्व : अध्याय 8 – छन्द 6, 8, 10, 20, 23, 24, 27, 28

दूसरा दृश्य

(अविरत सम्यग्दृष्टि भरत फिर भगवान बाहुबलि की ओर उन्मुख होकर कहने लगते हैं।)

अविरत सम्यग्दृष्टि सम्राट भरत – ''हे भगवन्! अभी तो मैं दो-पाटों के बीच पिसता रहता हूँ। कभी अन्तर में जाता हूँ, कभी बाहर आ जाता हूँ। स्थिरता नहीं हो पाती।

यद्यपि मैं यह अच्छी तरह जानता हूँ कि मैं तो इस विचलित परिणति का मात्र ज्ञाता-दृष्टा ही हूँ, कर्त्ता-धर्त्ता नहीं।

मेरी श्रद्धा तो सिद्धों के समान है, पर परिणति मैली है। परिणति तो भूमिकानुसार ही होती है न? और उसमें कुछ अदला-बदली भी नहीं हो सकती।

हे भगवन्! यह बात आपकी बताई हुई ही है। वस्तु का स्वरूप भी ऐसा ही है। इसकी सहज स्वीकृति ही सच्चा पुरुषार्थ है, मुक्ति का मार्ग है।

हे भगवन् मैं तो चाहता हूँ कि मेरा चित्त निरन्तर आत्मा में लगा रहे; किन्तु भूमिका के अनुसार विकल्प उठते हैं तो उन्हें कौन रोक सकता है?

यद्यपि उन्हें रोकना संभव नहीं है; तथापि उन्हें रोकने के विकल्प उठें तो उन्हें भी कौन रोके? हमें जो भूमिकानुसार इसप्रकार के विकल्प आते हैं; उन्हें हम ज्ञान का ज्ञेय बना लेते हैं।

यद्यपि हम तो यही चाहते हैं कि हमारे ज्ञान में एक आत्मा ही मुख्य रहे; पर ये विकल्पों के जाल भी कभी मुख्य बन जाते हैं। उन सबकी सहज

स्वीकृति ही एकमात्र सन्मार्ग है।

हे बाहुबलि भगवन्! उक्त मार्ग को छोड़कर और सभी मार्ग उन्मार्ग हैं।

सहजता ही जीवन का आदर्श है, जीवन की जान है। ज्ञानी का जीवन एकदम सहज होता है।

राजकुमार अर्ककीर्ति – क्या ज्ञानियों का जीवन ऐसा ही होता है?

सम्राट भरत – ज्ञानियों का गृहस्थ जीवन दुधारी तलवार के समान है। श्रद्धा निर्विकल्प रहती है और अपार विकल्पों का व्यापार चलता रहता है; किन्तु सन्तुलन कभी नहीं बिगड़ता।

नाव निरन्तर पानी में रहती है; पर नाव में पानी नहीं रहता; इसीलिये नाव डूबती नहीं हैं। यदि अपार पानी न हो तो नाव चल नहीं सकती और नाव में पानी आ जावे तो डूबने से बच नहीं सकती।

ज्ञानी जीव संसारसागर में ज्ञान की नाव चलाते हैं, पर ज्ञानियों के मन में संसारसागर नहीं रहता। यद्यपि ज्ञानी संसार में रहते हैं, पर उनकी दृष्टि में संसार नहीं रहता। आतमा को छोड़कर ज्ञानियों का मन अन्यत्र कहीं नहीं लगता।

यद्यपि कमल जल में डूबा रहता है, पर कमल को जल छू नहीं सकता। कमल पानी में डूबा रहे, पर सूखा रहता है। कमल रूखे स्वभाव का है, अस्पर्शस्वभावी है।

इसीप्रकार अबद्धस्पृष्टस्वभावी आत्मा को कर्म छू नहीं सकते, बाँध नहीं सकते; क्योंकि आत्मा का स्वभाव अबद्ध-अनछुआ है।

यह बात भगवान बाहुबलि ने ही बताई है। मैं निश्चय से जीव हूँ, कर्म मुझे छू नहीं सकते, बाँध नहीं सकते। न तो मैं कर्मों को बाँधता हूँ और न कर्म मुझे बाँधते हैं। यही बात परमार्थ है और सभी तो मात्र व्यवहार है।

भरत कह रहे हैं कि मैं चक्रवर्ती नहीं हूँ; क्योंकि चक्रवर्तीपन तो पर्याय है और मैं तो जीव हूँ, द्रव्य हूँ। मेरा अपनापन तो द्रव्य में है, स्वद्रव्य में है; पर्याय तो मात्र मेरे ज्ञान का ज्ञेय है।

द्रव्य तो निरन्तर रहता है, पर पर्याय तो आनी-जानी है। मैं तो अनादि का हूँ और यह चक्र तो अभी आया है। मैं तो अनन्तकाल तक रहूँगा, पर चक्र की तो अपनी सीमा है।

मैं असीम तत्त्व हूँ। मेरी कोई सीमा नहीं है।

(नेपथ्य में मंदस्वर में निम्नांकित गीत चल रहा था।)

(रेखता)

अरे मैं दो पाटों के बीच निरन्तर पिसता रहता हूँ।
कभी अन्तर में जाता हूँ, कभी बाहर आ जाता हूँ।।
अरे अन्तर बाहर में आना जाना सदा लगा रहता।
अरे अगणित विकल्प भी नाथ! सदा आते-जाते रहते।। 1 ।।

अरे मैं तो इस विचलित परिणति का बस ज्ञाता-दृष्टा हूँ।
अरे जो सहजभाव से होता है मैं उसे जानता हूँ।।
अरे कर्त्ता-धर्त्ता मैं नहीं नाथ! मैं जाननहारा हूँ।
अरे मैं तो हूँ सबसे भिन्न निराला देखनहारा हूँ।। 2 ।।

अरे है श्रद्धा सिद्धों के समान पर परिणति मैली है।
अरे हे नाथ! भूमिका जैसी हो परिणति भी वैसी हो।।
अरे इसका ही सम्यग्ज्ञान जिनेश्वर मुक्ति का मग है।
और इसके ही तो अनुसार परिणमन होता सम्यक् है।। 3 ।।

भूमिका के अनुरूप विकल्प होंय तो उनको रोके कौन?।
रोकने का विकल्प भी उठे यदि उनको भी रोके कौन?।।
अरे अनुसार भूमिका के हमें आते हैं जो भी भाव।
ज्ञान के ज्ञेय बना लेते सहज ही सब प्रकार के भाव।। 4 ।।

यद्यपी एक आतमा ही हमारे लिये निरन्तर मुख्य।
तथापि ये विकल्प के जाल कभी भी हो जाते हैं मुख्य।।
सहज स्वीकृति ही तो है अरे लोक में एक मात्र सन्मार्ग।
प्रभो श्री बाहुबलीजी! इसे छोड़ हैं और सभी उन्मार्ग।। 5 ।।

ज्ञानियों का गृहस्थ जीवन अरे होता है दुधारु धार।
रे श्रद्धा निर्विकल्प रहती विकल्पों का अपार व्यापार।।
निरन्तर चलता रहता है इसे ही कहते हैं व्यवहार।
सन्तुलन कभी बिगड़ता नहीं नाव रहती है नित मझधार।। 6 ।।

नाव रहती नित पानी में नाव में पानी रहता नहीं।
नाव में पानी रहता नहीं इसलिये नाव डूबती नहीं।।
अगर पानी अपार ना हो नाव फिर चल सकती है नहीं।
नाव में पानी आ जावे डूबने से बच सकती नहीं।। 7 ।।

कमल जल में ही रहता है कमल को जल छू सकता नहीं।
कमल का ही स्वभाव ऐसा कि उसको जल छू सकता नहीं ।।
कमल पानी में डूबा रहे किन्तु वह सूखा रहता है।
कमल रूखे स्वभाव का है उसे पानी छू सकता नहीं ।। 8 ।।

अरे अस्पर्श स्वभावी जीव करम उसको छू सकते नहीं।
आतमा को छू ले कोई किसी में ऐसी शक्ति नहीं।।
करम उसको छू लें बाँधें करम में ऐसी शक्ति नहीं।
आतमा है अबद्ध-अनछुआ [1] बात यह प्रभो! आपने कही ।। 9 ।।

मैं तो निश्चय से हूँ जीव करम मुझको छू सकते नहीं।
मैं हूँ अबद्धस्वभावी जीव करम से मैं बँध सकता नहीं ।।
नहीं मैं करमों को बाँधू नहीं वे करम मुझे बाँधें।
यही है बात अरे परमार्थ और सब बातें हैं व्यवहार ।। 10 ।।

अरे मैं चक्रवर्ती हूँ नहीं अरे मैं निश्चय से हूँ जीव।
चक्रवर्तीपन है पर्याय और मैं हूँ निश्चय से द्रव्य।।
अरे पर्याय तो होती क्षणिक द्रव्य होता अविनाशी नित्य।
द्रव्य में मेरा अपनापन और पर्याय ज्ञान का ज्ञेय ।। 11 ।।

द्रव्य तो रहे निरन्तर नित्य किन्तु आनी-जानी पर्याय।
मैं तो हूँ अनादि का द्रव्य और यह चक्र अभी आया ।।
मैं तो रहूँ अनन्ताकाल चक्र की अपनी सीमा है।
मैं तो हूँ असीम भगवान न मेरी कोई सीमा है ।। 12 ।। [2]

पटाक्षेप

1. अबद्ध-अनछुआ = अबद्धस्पृष्ट

2. भरत का अन्तर्द्वन्द्व : अध्याय 8 - छन्द 35,36,37,40,41,43, 44,46,47,48,49,50

छहढाला प्रवचन

जैनशासन की शोभा : समताधारी सन्त

तप तपें द्वादश धरें वृष दश रत्नत्रय सेवें सदा,
मुनि साथ में वा एक विचरें चहें नहिं भव सुख कदा।
यों है सकल संयम चरित सुनिये स्वरूपाचरन अब,
जिस होत प्रकटे आपनी निधि मिटे पर की प्रवृत्ति सब।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला की छठवीं ढाल पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

चैतन्य की शान्ति में मग्न रहनेवाले मुनिराज ने कषाय का भार दूर कर दिया है और वे उत्तम क्षमा आदि गुणों के विशाल भण्डार सहित मोक्ष की ओर जा रहे हैं।

सम्यग्दर्शन और ज्ञान के पश्चात् मुनिराज को चारित्रधर्म के दस प्रकार होते हैं। वे मुनिराज उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम, तप, त्याग, आकिञ्चन और ब्रह्मचर्य – इन दस धर्मों को धारण करते हैं ।

वे मुनिराज रत्नत्रय के धारक हैं। वे निःशंकित आदि आठ अंग सहित सम्यक्त्व का, विनय-उपधान आदि आठ अंग सहित सम्यग्ज्ञान का और व्रत-समिति-गुप्ति रूप तेरह प्रकार के चारित्र का सदा सेवन करते हैं। देखो मुनि की यह क्रिया! मोक्षमार्ग में यही क्रिया करने योग्य है। यह सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप क्रिया आत्मा के चिदानन्द स्वभाव में शामिल है, राग में उसका अभाव है। आहाहा...! मुनिराज को आहार करते समय या अल्पनिद्रा लेते समय भी आत्मा में रत्नत्रय का सेवन चालू है। चलते

फिरते-बोलते तथा उपसर्ग-परिषह के प्रसंगों में भी उन्हें बारह प्रकार के कषायों के अभावपूर्वक रत्नत्रय की आराधना चलती ही रहती है, उनकी अपार शान्ति की क्या बात कहें? सम्यग्दृष्टि को मात्र अनन्तानुबन्धी कषाय के अभाव से भी स्वभाव की अपूर्व शान्ति का वेदन होता है। श्रावक को अनन्तानुबन्धी और अप्रत्याख्यानावरणी इन दो कषाय चौकड़ी के अभाव से विशेष शान्ति का वेदन होता है, उन्हें सर्वार्थसिद्धि के एकभवावतारी अहमिन्द्रों से भी अधिक शान्ति होती है और मुनिराज को अनन्तानुबन्धी, अप्रत्याख्यानावरणी और प्रत्याख्यानावरणी क्रोध-मान-माया-लोभ का अत्यन्त अभाव होने से स्वरूप में एकाग्रता की महान शान्ति का वेदन सदा होता रहता है। उनका आत्मा स्वयं रत्नत्रयधर्मरूप परिणमित हो गया है अर्थात् वे स्वयं रत्नत्रय धर्म हैं।

प्रवचनसार गाथा ६२ में आचार्य कुन्दकुन्द 'यह आत्मा स्वयं धर्म हो - यही मनोरथ है' - ऐसा कहकर कहते हैं 'शुद्धोपयोग के प्रसाद से यह आत्मा स्वयं धर्म हो गया' मनोरथ पूरा हो गया। वीतरागचारित्ररूप परिणमित मेरा आत्मा स्वयं धर्म होकर सदा निष्कम्प रहता है। देखो तो जरा! मुनियों की पड़कार! सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप परिणमित आत्मा स्वयं ही मोक्षमार्ग है।

मोक्षमार्गी मुनिराज भव सुख को नहीं चाहते। चैतन्यसुख की मिठास को जाननेवाले मुनिराज विषयसुख की चिकनाहठ में क्यों चिपटेंगे? मुनिराज को चैतन्यसुख के अत्यन्त मधुर स्वाद के सामने इन्द्रिय भोगों का स्वाद उड़ जाता है, उन्हें इन्द्रिय सुख नहीं ललचा सकते। यद्यपि अविरत सम्यग्दृष्टि को भी भव सुख की वांछा नहीं होती, उन्हें विषयों में सुख बुद्धि नहीं होती; तथापि अभी थोड़ी अस्थिरता के कारण विषयों में परिणाम

चला जाता है, जबकि मुनियों का परिणाम तो विषयों से पूरी तरह हटकर चैतन्य सुख में लीन हो गया है। उन्हें तो जगत के विषय लुब्ध प्राणियों को देखकर दया आती है कि अरे रे! ये अज्ञानी जीव अपने सुख स्वभाव को भूलकर दुःख से विषयों की ओर तेजी से दौड़ रहे हैं; परन्तु उन्हें विषयों में से व्याकुल होकर कभी सुख नहीं मिलेगा। इसप्रकार विषयों से विरक्त मुनिराज भव सुख में नहीं ललचाते, उनका चित्त तो मोक्ष के महान आनन्द में लगा है। मुनिराजों को ऐसी धर्मक्रिया की पहचान होने पर अपनी आत्मा की अनुभूति की पहचान भी होती है, रागरूप क्रिया और शुद्ध भावरूप क्रिया में भेदज्ञान होता है और राग से भिन्न शुद्धात्मा की अनुभूति होती है।

यहाँ तक मुनियों के संयमाचरण का वर्णन किया गया है अर्थात् उनके आचरण में संयमपूर्वक होने वाली सावधानी का वर्णन किया गया है; अब उनके स्वरूपाचरण का वर्णन सुनो! जब उनका उपयोग अन्तर्मुख होकर स्वरूप में विचरण करता है तब उनकी आन्तरिक प्रवृत्ति कैसी होती है; सो सुनो!

यह स्वरूपाचरण शुद्धोपयोगरूप है, इसके होने पर अपना केवलज्ञान निधान प्रकट होता है और समस्त पर प्रवृत्ति मिट जाती है। पहले तो उनका उपयोग सातवें-छठवें गुणस्थान में आता जाता रहता था; क्षण में अन्दर और क्षण में बाहर, फिर अन्दर इसप्रकार स्वरूप में लीन होकर पुनः बाहर आता था; परन्तु फिर शुद्धोपयोगरूप स्वरूपाचरण द्वारा केवलज्ञान होने पर अब कभी बाहर नहीं आता अर्थात् कभी पर प्रवृत्ति नहीं होती। अब छंद क्रमांक ८-९-१० में ऐसे शुद्धोपयोगरूप स्वरूपाचरण का और छंद क्रमांक ११-१२ में उसके फलरूप केवलज्ञान और मोक्षपद का वर्णन करेंगे।

यहाँ मुनि के जिस स्वरूपाचरण की बात चल रही है, वह सातवें और

उससे ऊपर के गुणस्थानों में होने वाली शुद्धोपयोगरूप एकाग्रता की बात है। एक स्वरूप में ही चरण-रमण-लीनता ही स्वरूपाचरण है, जिसके फल में अन्तर्मुहूर्त में ही केवलज्ञान प्रकट होता है। सम्यग्दृष्टि जीव को अनन्तानुबन्धी कषाय का अभाव होने पर चारित्र में जो शुद्धि का अंश अर्थात् आंशिक अकषायभावरूप आचरण प्रकट होता है, वह भी स्वरूपाचरण कहलाता है। यह तो सम्यग्दृष्टि को नरक में भी होता है, बाह्य प्रवृत्ति के समय भी होता है; परन्तु यहाँ जिस स्वरूपाचरण की बात चल रही है, वह मुनियों को ही होता है और उनमें भी यहाँ शुद्धोपयोग द्वारा निर्विकल्प ध्यान में ठहरे हुए मुनियों की बात है; क्योंकि अब आगे बढ़ते-बढ़ते केवलज्ञान और मोक्ष तक की बात कहकर यह शास्त्र पूरा करेंगे।

अहा! उपयोग को अन्तर्मुख करके जब मुनिराज स्वरूप में सातिशयरूप से ठहरते हैं, तब उनका स्वरूपाचरण ऐसा उज्ज्वल शुक्लध्यानरूप होता है कि जिसके प्रताप से चैतन्य खजाने में केवलज्ञान आदि अनन्त निधान प्रकट होते हैं। मुनिराज निर्विकल्प होकर स्वरूप में ठहरते हैं, चैतन्य बाग में अतीन्द्रिय आनन्द का चारा चरते हैं, वे स्वरूप में से कभी बाहर नहीं आते, केवलज्ञान प्रकट करके मोक्ष में जाते हैं।

वाह! धन्य यह दशा! ऐसे स्वरूप ध्यानी मुनिराज की ध्यान दशा में क्या होता है, अब इसका अद्भुत वर्णन करेंगे। **(क्रमशः)**

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो-वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें -

वेबसाइट - **www.vitragvani.com**

सम्पर्क सूत्र - श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई

Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com

ये सभी प्रवचन सामग्री अब **vitragvani** ऐप पर भी उपलब्ध हैं।

नियमसार प्रवचन –

प्रत्याख्यानी ही आत्मावलम्बी

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के परमार्थप्रतिक्रमणाधिकार की गाथा १०० पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। गाथा मूलत: इसप्रकार हैं –

आदा खु मज्झ णाणे आदा मे दंसणे चरित्ते य।
आदा पच्चक्खाणे आदा मे संवरे जोगे ।।१००।।

(हरिगीत)

मम ज्ञान में है आतमा दर्शन चरित में आतमा।
अर योग संवर और प्रत्याख्यान में भी आतमा ।।१००।।

वास्तव में मेरे ज्ञान में आत्मा है, मेरे दर्शन में तथा चारित्र में आत्मा है, मेरे प्रत्याख्यान में आत्मा है, मेरे संवर में तथा योग में (शुद्धोपयोग में) आत्मा है।

(गतांक से आगे....)

(२) ''पूजित परमपंचमगति की प्राप्ति के हेतुभूत पंचमभाव की भावनारूप से परिणमित जो मैं उसके सहज सम्यग्दर्शन विषय में (अर्थात् मेरे सहज सम्यग्दर्शन में) वह (आत्मा) है।''

सम्यग्दर्शन के ध्येय में पंचमभाव अर्थात् परमपारिणामिक स्वभावभाव ही है। उदय, उपशम, क्षयोपशम या क्षायिक ये भाव सम्यग्दर्शन के विषय में नहीं हैं। त्रिकाली ध्रुव-स्वभाव की भावनारूप से परिणमित मेरे सहज सम्यग्दर्शन के विषय में भी शुद्ध आत्मा ही है। उस परमस्वभाव की भावना से ही सम्यग्दर्शन प्रगट होता है। सम्यग्दर्शन का विषय अर्थात् सम्यग्दर्शन का ध्येय।

पहले पंचमभाव की परिणति को पूजित कहा था, वहाँ त्रिकाल

(कारणशुद्धपर्याय) की बात थी और यहाँ सम्यग्दर्शन के त्रिकाली विषय की भावना से जो कार्य प्रगट हुआ, उस पंचमगति को पूजित कहा है। वह मोक्षगति पंचमभाव की भावना से प्रगट होती है। उस स्वभावभाव की भावनारूप से परिणमित मेरे सहजसम्यग्दर्शन में वह आत्मा ही है।

(३) ''साक्षात् निर्वाणप्राप्ति के उपायभूत, निजस्वरूप में अविचल स्थितिरूप सहज परमचारित्रपरिणतिवाला जो मैं, उसके (अर्थात् मेरे) सहजचारित्र में भी वह परमात्मा सदा सन्निहित (निकट) है।''

मोक्ष का साक्षात् उपाय चारित्र है; परन्तु वह चारित्र कहीं बाहर के आश्रय से नहीं है, वह तो आत्मा के आश्रय से ही है। वह चारित्र साक्षात् मोक्ष का उपायभूत है और निजस्वरूप में अविचल स्थितिरूप है। ऐसे सहज परमचारित्र में मेरा आत्मा ही है।

सम्यग्दर्शन-ज्ञान परम्पराकारण है और सम्यक्चारित्र अन्तरंगकारण-साक्षात् कारण है।

उस सहजचारित्र में आत्मा ही निकटपने वर्तता है। पंचमहाव्रत का विकल्प तो वास्तव में चारित्र से बाहर है। चारित्र में तो चैतन्यपरमात्मा ही सदा निकट है। जितना चैतन्यपरमात्मा की समीपता में रहे, उतना ही चारित्र है और जितना उससे दूर रहे; उतना ही अचारित्र है। चारित्रदशा अन्तर में आत्मा के आश्रय से ही है। अभी जिसे आत्मा का भान भी न हो, उसे आत्मा की निकटता कहाँ से होगी? उसको चारित्र कैसे होगा? नहीं हो सकता। चारित्र के बिना मुक्ति नहीं होती यह बात ठीक है, किन्तु वह चारित्र होता किसको है? प्रथम तो जो आत्मा का श्रद्धान-ज्ञान करे, फिर उसके आश्रय से स्थिरता करे; तब चारित्र होता है।

यहाँ तो 'सहजज्ञानरूप से परिणमित मैं, पंचमभाव की भावनारूप से परिणमित मैं, सहजचारित्रपरिणतिवाला मैं' इसप्रकार प्रत्येक बोल में परिणमितवाले की बात की है; क्योंकि स्वयं मुनि हैं और सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की पर्यायपने परिणमित हैं।

(४) ''भेदविज्ञानी, परद्रव्य से पराङ्मुख और पंचेन्द्रिय के फैलाव रहित देहमात्र परिग्रहवाला जो मैं, उसके निश्चयप्रत्याख्यान में कि जो (निश्चयप्रत्याख्यान) शुभ, अशुभ, पुण्य, पाप, सुख और दुःख इन छह के सकलसंन्यासरूप है (सम्पूर्ण त्यागरूप है); उसमें वह आत्मा सदा आसन्न (निकट) है।''

प्रथम सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की बात करके फिर प्रत्याख्यान की बात की, क्योंकि उन तीनों के सहित ही प्रत्याख्यान होता है। यहाँ मुनि के प्रत्याख्यान की बात है।

मुनि कैसे हैं? प्रथम तो भेदविज्ञानी हैं, परद्रव्य से पराङ्मुख हैं, स्वरूप में निकट हैं और परद्रव्य से दूर हैं, पाँच इन्द्रियों के फैलाव से रहित हैं, मात्र देह का ही जिनको परिग्रह है अर्थात् निर्ग्रन्थदशा है ऐसे मुनि को निश्चयप्रत्याख्यान में सदा आत्मा ही निकट है।

कैसा है वह प्रत्याख्यान? शुभ-अशुभ, पुण्य-पाप और सुख-दुःख ऐसी छह वस्तुओं के त्यागस्वरूप है। शुभ-अशुभभाव, उनसे बँधनेवाले पुण्य-पाप कर्म और उनके फलरूप सुख-दुःख का बाह्यसंयोग इनका प्रत्याख्यान में अभाव है। वस्त्र-भोजनादि सुख के अथवा सिंह-बैरी आदि दुःख के निमित्तों के ऊपर मेरा लक्ष्य नहीं है - यही प्रत्याख्यान है। मुनि के प्रत्याख्यान में शुभाशुभ परिणामों का अभाव वर्तता है, द्रव्यकर्म छूट जाता है तथा बाह्य निमित्तों पर से लक्ष्य छूट जाता है एवं वस्त्रादि निमित्त भी छूट जाते हैं। वर्तमान में तो शुभाशुभभाव की भावना नहीं और पूर्व के शुभ से उच्च पुण्य बँध गया हो तो उसके फल की भी भावना नहीं; इसलिए उसका भी त्याग वर्तता है।

शुभ-अशुभ भावकर्म है, पुण्य-पाप द्रव्यकर्म है और सुख-दुःख (अनुकूल-प्रतिकूल संयोग) वह नोकर्म है - इन सबके अभावरूप प्रत्याख्यान है। स्वभाव में एकाग्र होनेवाले को इन सबका लक्ष्य छूट जाता है। प्रत्याख्यान में अकेला परमशुद्ध आत्मा ही निकटपने वर्तता है,

उसी में एकाग्रता है। हमारे प्रत्याख्यान में एक समय भी आत्मा दूर नहीं है। प्रत्याख्यान की पर्याय आत्मा के साथ अभेद हो गई है। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र और प्रत्याख्यान इन सभी निर्मल पर्यायों की आत्मा के साथ एकता हो गई है, इसलिए इनमें आत्मा ही सदा निकट है। अहो! ऐसे आत्मा में जिसने अन्तर्मुख लक्ष्य करके अभेदता की, उसे ही सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र और प्रत्याख्यान होता है।

(५) ''सहजवैराग्यरूपी महल के शिखर का शिखामणि, स्वरूपगुप्त और पापरूपी अटवी को दग्ध करने के लिए पावक समान जो मैं, उसके शुभाशुभ संवर में वह परमात्मा है।''

चैतन्य में लीनता होने पर मुनि की आत्मा में वैराग्यरूपी महान महल रच जाता है। सहजपने पर से उपेक्षा, अति उपेक्षा होकर उदासीनता हो गई है। पर से वैराग्य है और स्वरूप में गुप्त हैं। जैसे नगर में बड़े-बड़े शिखर होते हैं, वैसे ही मुनिवरों की आत्मा में वैराग्यरूप महल का उच्च शिखर है।

देखो तो सही! मुनि स्वयं अपने को लक्ष्य करके कहते हैं कि मैं सहजवैराग्यरूपी महल के शिखर का शिखामणि हूँ, स्वरूपगुप्त हूँ और पापरूपी वन को जलाने के लिए प्रचण्ड अग्नि समान हूँ। मेरे शुभाशुभ के संवर में भी परमात्मा ही है। अहो! एक परमशुद्ध आत्मा ही मेरे सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र, प्रत्याख्यान व संवर में है। शुभ और अशुभभाव के संवर में आत्मा है अर्थात् आत्मा के आश्रय से एकाग्र होने पर शुभाशुभभाव की उत्पत्ति ही नहीं होती, उसका नाम संवर है। **(क्रमशः)**

'आत्महित के लिए संयोगी पर्यायों पर दृष्टि केन्द्रित करना उपयोगी नहीं; अपितु उन पर से दृष्टि हटाना आवश्यक है, दृष्टि को पर्यायों पर से हटाकर स्वभाव सन्मुख करना आवश्यक है'

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

समयसार की ४७ शक्तियों पर प्रवचन

प्रकाश शक्ति

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी द्वारा समयसार की ४७ शक्तियों पर किये गये प्रवचनों को यहाँ पाठकों के लाभार्थ क्रमशः प्रकाशित किया जा रहा है।

(गतांक से आगे....)

भाषावर्गणा की पर्याय का कर्ता आत्मा नहीं है, केवली नहीं हैं तथा केवली को जो योगजन्य कम्पन होता है, वह भी भाषावर्गणा की पर्याय का कर्ता नहीं है। भाषावर्गणा जड़ है, वह स्वयं स्वतंत्र रीति से जिस काल में परिणमन के योग्य होती है, उस काल में परिणमित हो जाती है। प्रयोग करके आत्मा उसको परिणमित करवा दे – ऐसा तीन काल में नहीं होता।

भाषा में स्व-पर को कहने की ताकत है और आत्मा में स्व-पर को जानने की ताकत है। प्रभु! जिनागम का मार्ग तो देखो! द्रव्य में पर्याय अपने आप स्वतंत्र प्रकट होती है। वाणी में स्व-पर को जानने की ताकत नहीं है और आत्मा में स्व-पर को कहने की ताकत नहीं है। ऐसी वस्तुस्थिति है; फिर भी 'मैं वाणी का कर्ता हूँ' – ऐसा कोई माने तो वह मूर्ख ही है।

अरे भाई! यह बाह्य लक्ष्मी, मकान, शरीर, मन, वाणी इत्यादि मेरे हैं – ऐसा मानना तो मिथ्याभ्रम है ही। अरे, यह राग का अंश भी जहाँ तेरा नहीं है तो तुझसे त्रिकाल भिन्न परवस्तु तेरी कैसे हो सकती है? परवस्तु का क्षेत्र ही भिन्न है प्रभु!

समवशरण में जीव अनन्त बार गया और वहाँ भगवान की दिव्यध्वनि अनन्त बार सुनी, वहाँ वाणी सुनकर जो ज्ञान की पर्याय प्रगट हुई, वह स्वयं से हुई है। वाणी के कारण नहीं हुई है। भले वह परलक्षी ज्ञान है; परन्तु वाणी से वह परलक्षी ज्ञान हुआ हो - ऐसा नहीं है, परलक्षी ज्ञान भी स्वयं के उपादान से ही उत्पन्न होता है। हाँ, इतना अवश्य है कि परलक्षी ज्ञान में आत्मा प्रत्यक्ष नहीं होता।

देखो! कितनी दूर-दूर से लोग यह बात सुनने आते हैं। हम तो परमात्मा की दिव्यध्वनि में आई हुई बात कहते हैं कि - जो तुम्हें यह तत्त्वज्ञान हुआ, वह शास्त्रश्रवण से नहीं हुआ, स्वयं से ही हुआ है। **सुनने के निमित्त से होनेवाली ज्ञान की पर्याय में वह ज्ञान स्वयं से ही हुआ है।** जिसमें आत्मा प्रत्यक्ष नहीं होता, ऐसा अकेला परलक्षी ज्ञान वस्तुतः ज्ञान ही नहीं है; क्योंकि वह मिथ्याज्ञान है; उसे ज्ञान कौन कहे? परन्तु कोई परमात्मा की वाणी सुनकर शक्तिसम्पन्न निज द्रव्य का विचार करता है, ध्यान करता है तो उसके द्रव्य-गुण में जो अनादिकालीन शक्ति है, उसका पर्याय में परिणमन होकर आत्मा स्वसंवेदन में प्रत्यक्ष हो जाता है, तब वाणी को इस परिणमन में निमित्त कहा जाता है।

इसमें 'स्वयं' और 'विशद' इन दो शब्दों का खास वजन है। आत्मा किसी की अपेक्षा से रहित स्वयं प्रकाशमान है और विशद अर्थात् स्पष्ट, प्रत्यक्ष स्वसंवेदन होकर जानने में आता है।

अहो! आचार्य भगवन्तों ने वन में रहकर कैसा अद्भुत काम किया है। देखो! मूल गाथायें आचार्य कुन्दकुन्ददेव ने दो हजार वर्ष पहले रची हैं तथा उनके एक हजार वर्ष बाद उनकी टीका श्री अमृतचन्द्र सूरि ने बनाई है।

अहो! दिगम्बर मुनिवर तो चलते-फिरते सिद्ध हैं। निज एक ज्ञायकभाव

में जिन्होंने उपयोग को जमाया है, लवलीन किया है और जो प्रचुर स्वसंवेदन में मस्त, निजानन्द रस में लीन रहने वाले हैं, ऐसे योगीश्वरों ने यह दिव्यशास्त्र रचा है।

यद्यपि शुद्धोपयोग तो चतुर्थ गुणस्थान से प्रारंभ हो जाता है; परन्तु शुद्धोपयोग की जैसी उग्र लीनता मुनिवरों को होती है, वैसी समकिती को चौथे गुणस्थान में नहीं होती।

मुनिराज को तीन कषाय के अभाववाली शुद्धोपयोग की तीव्र लीनता होती है; तथापि सम्यग्दृष्टि को चौथे गुणस्थान में, गृहवास होने पर भी आत्मा स्वसंवेदन प्रत्यक्ष अनुभव में आये – ऐसी यह प्रकाशशक्ति है। यह न्याय की बात है।

चौथे गुणस्थानवर्ती समकिती कहता है कि मैं अपने आत्मा का स्वसंवेदन प्रत्यक्ष से अनुभव करता हूँ। अहो! यह स्वसंवेदन अचिन्त्य महिमायुक्त है, उसमें अनन्तगुणों का रस समाया है, उसमें अतीन्द्रिय आनन्द झरता है, स्वरूप की प्रतीति प्रगट होती है और अनन्त शक्तियाँ निर्मलतया उछलती हैं। अहो! यह स्वसंवेदन तो मोक्ष का द्वार खोलने वाला रामबाण उपाय है।

चक्रवर्ती छह खण्ड के राज्य में रहता है – ऐसा भले ही बाहर से दिखता है; परन्तु वास्तव में समकिती ज्ञानी चक्रवर्ती राज्य का स्वामी नहीं है। ४७ शक्तियों में अन्तिम स्व-स्वामित्वमयी संबंध शक्ति है।

आहाहा...! **समकिती चक्रवर्ती ९६ हजार रानियों के समूह में दिखता है तो भी वह स्वयं के द्रव्य-गुण और स्वसंवेदन की निर्मल पर्याय, जो उसे प्रगट हुई है; उसी का स्वामी है, राग का, विकल्प का स्वामी नहीं है।**

जब राग का ही स्वामी नहीं है, तब राज्य का, पर का अथवा स्त्री का

स्वामी है, यह बात ही कहाँ रही? अर्थात् वह इनका भी स्वामी नहीं है।

आहाहा...! इस प्रकाशशक्ति का अन्य अनन्तशक्तियों में रूप है, जिससे ज्ञान, श्रद्धान, आनन्द इत्यादि प्रत्यक्ष होवें – ऐसा इसका स्वरूप है। अहो! यह तो बड़ा भण्डार भरा है, जिसका पार न आवे, ऐसी यह बात है। एक-एक शक्ति में इतना भरा है कि जितना एक 'जगत' शब्द के विस्तार में भरा है।

आहाहा...! छह द्रव्य, इनके गुण, इनकी पर्यायें, तीन काल, अनन्त सिद्ध, अनन्त निगोद राशि, अनन्तानन्त पुद्गल। ओहो! जब 'जगत' शब्द का इतना व्यापक अर्थ है, तब उसको जाननेवाले ज्ञान की सामर्थ्य का क्या कहना? ऐसा एक-एक शक्ति का बहुत अपरिमित विस्तार है तथा मात्र प्रत्यक्ष अनुभव में ही ज्ञात हो सकता है। **(क्रमशः)**

वीतराग विज्ञान के स्वामित्व का विवरण (फार्म नं. 4 नियम नं. 8)

समाचार पत्र का नाम	:	वीतराग विज्ञान (हिन्दी)
प्रकाशन स्थान	:	श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 (राज.)
प्रकाशन अवधि	:	मासिक
प्रकाशक एवं मुद्रक	:	ब्र. यशपाल जैन (भारतीय) द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम.आई.रोड, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।
सम्पादक का नाम	:	डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल (भारतीय) श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15
स्वामित्व	:	पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15

मैं ब्र. यशपाल जैन एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकृत जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

26/03/2022 – प्रकाशक : **ब्र. यशपाल जैन**

ट्रस्टी, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

(गतांक से आगे ...)

प्रश्न : आत्मा और बन्ध को भिन्न करने का साधन क्या?

उत्तर : आत्मा और बन्ध को भिन्न करने में भगवती प्रज्ञा ही एक साधन है। राग से भिन्न स्वभावसन्मुख झुकाव करना, एकाग्रता करना, ढलना - यही एक साधन है। राग से भिन्न पड़ने में ज्ञान के अतिरिक्त अन्य कोई साधन है ही नहीं।

प्रश्न : इस भेदज्ञान की भावना कब-तक करनी चाहिए?

उत्तर : जब-तक ज्ञान ज्ञान में ही न ठहर जाय। तब-तक अच्छिन्नधारा से भेदज्ञान भाना। पर से भिन्न शुद्धात्मा की भावना करते-करते ज्ञान के ज्ञान में ठहरने पर रागादि से भिन्न होकर सम्यग्ज्ञान प्राप्त होता है, उसके पश्चात् भी पर से भिन्न - ऐसे शुद्धात्मा की सतत् भावना करते-करते केवलज्ञान प्राप्त हो जाता है; अत: केवलज्ञान होने तक अच्छिन्न धारा से भेदज्ञान की भावना करना चाहिये। इस भेदज्ञान की भावना को रागरूप मत समझना; अपितु शुद्धात्मा के अनुभवरूप समझना।

प्रश्न : एक ओर तो कहते हैं कि ज्ञानी का भोग निर्जरा का कारण है और दूसरी ओर कहते हैं कि शास्त्र की ओर जानेवाला लक्ष्य शुभराग होने से बन्ध का कारण है।

यहाँ प्रश्न है कि जब शास्त्रलक्ष्यी शुभराग भी बन्ध का कारण है तो फिर भोग भोगनेरूप अशुभराग निर्जरा का कारण कैसे हो सकता है?

उत्तर : ज्ञानी के ज्ञान का अचिन्त्य माहात्म्य बताने के लिए भोग को निर्जरा का कारण कहा है; भोग की पुष्टि के लिये नहीं। समयसार में

एक जगह कहते हैं कि हे ज्ञानी! तू परद्रव्य के भोग को भोग – ऐसा कहकर आचार्यदेव कहीं भोग भोगने की प्रेरणा नहीं दे रहे हैं; अपितु उनके कहने का आशय यह है कि इस जीव को परद्रव्य के कारण किंचित् भी बन्ध नहीं होता। शास्त्र में जहाँ जिस आशय से, अभिप्राय से कथन किया गया हो; वहाँ उसी अभिप्राय से समझना चाहिये।

प्रश्न : संयमलब्धिस्थान को पुद्गल का परिणाम कहा है तो वहाँ सरागसंयम लेना या वीतरागसंयम?

उत्तर : संयम तो सराग होता नहीं, वीतरागी भाव संयम है, शुद्धपर्याय है; परन्तु उनके दो भेद पड़ते हैं और उनके ऊपर लक्ष्य देने से राग होता है, इसलिये उसे पुद्गल का परिणाम कहा है। जीव तो एकरूप अखण्ड है; उसमें भेद करने पर जितने परिणाम जीवस्थान, मार्गणास्थान, गुणस्थान के हों; वे सब पुद्गल की रचना है, जीव की नहीं – ऐसा निस्संदेह जानो।

प्रश्न : उपयोग को कितना अन्दर ले जाने से आत्मा का दर्शन होता है – आत्मा प्राप्त होता है?

उत्तर : जो उपयोग बाहर में जाता है, उसे अन्दर स्व में ले जाना है। उपयोग का स्व में ले जाना ही अन्दर ले जाना कहा जाता है। उपयोग के स्व में ढलते ही आत्मा का दर्शन होता है।

प्रश्न : क्या आत्मा और राग का भेदज्ञान करना अशक्य है?

उत्तर : नहीं, नहीं। यद्यपि आत्मा और राग की संधि अतिसूक्ष्म है, बहुदुर्लभ है; तथापि अशक्य तो नहीं। ज्ञानोपयोग को अतिसूक्ष्म करने पर वह आत्मा लक्ष्य में आ सकता है। पंचमहाव्रत के परिणाम अथवा शुक्ललेश्यारूप कषाय की मन्दता के परिणाम अतिसूक्ष्म अथवा दुर्लभ नहीं है; किन्तु आत्मा अतिसूक्ष्म है; अतः उपयोग को अतिसूक्ष्म करने से आत्मा अनुभव में आता है। **(क्रमशः)**

समाचार दर्शन -

पंचतीर्थ जिनालय के पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का –

10वाँ वार्षिकोत्सव सानन्द सम्पन्न

जयपुर (राज.) यहाँ पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के तत्त्वावधान में ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन स्थित पंचतीर्थ जिनालय का 10 वाँ वार्षिकोत्सव शुक्रवार, 25 फरवरी से रविवार, 27 फरवरी, 2022 तक विविध अनुष्ठानों सहित भक्ति-भाव पूर्वक सम्पन्न हुआ। ध्वजारोहण श्री निहालचंदजी घेवरचंदजी जैन परिवार पीतल फैक्ट्री जयपुर के करकमलों से हुआ। मण्डप उद्घाटन श्री ताराचंदजी सोगानी परिवार जयपुर एवं मंच उद्घाटन श्री शांतिलालजी चौधरी परिवार भीलवाड़ा ने किया।

इस अवसर पर अध्यात्मवेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के लाइव प्रवचन एवं आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन व अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के वीडियो प्रवचन का प्रसारण किया गया। 25 व 26 फरवरी को रात्रि में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली व डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर के प्रवचनसार विषय पर व्याख्यान का लाभ मिला।

प्रवचनसार मण्डल विधान का भव्य आयोजन

प्रतिदिन प्रातःकाल तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर द्वारा लिखित 'प्रवचनसार मण्डल विधान' का भव्य आयोजन किया गया। विधान विशेषज्ञ डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर ने विधान में आगत महत्त्वपूर्ण तथ्यों की ओर ध्यान आकर्षित किया। विधानाचार्य पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री ने पण्डित रिमांशुजी शास्त्री, पण्डित समकितजी शास्त्री व पण्डित दिव्यांशजी शास्त्री के सहयोग से विधान सम्पन्न कराया। विधान आमंत्रणकर्ता श्रीमती कुसुमजी गंगवाल जयपुर के अतिरिक्त श्रीमती श्रीकांताबाई छाबड़ा, श्रीमती लीलादेवीजी दौसा, श्रीमती श्रीजी दिल्ली, श्री वीतराग-विज्ञान महिला मण्डल, बापूनगर एवं श्रीमती भावनाजी शिवानीजी भीलवाड़ा थे।

सामान्य से विशिष्ट तक : एक अनोखी प्रस्तुति

इस अवसर पर श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने 'सामान्य से विशिष्ट तक' नामक एक कार्यक्रम के माध्यम से स्नातकों से प्रेरणास्पद संवाद किया। स्नातकों ने अपने अंतर्मन में चल रही भावनाओं को व्यक्त करते हुए जीवन में तत्त्वज्ञान की उपयोगिता

को सिद्ध किया एवं महाविद्यालय को जीवन निर्माण का हेतु बताया। साक्षात्कार में प्रथम बैच के पण्डित महावीरजी पाटील सांगली, पण्डित वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, श्री के. सी. जैन मास्टर साहब बण्डा, इंदौर से पण्डित गौरवजी, सौरभजी शास्त्री एवं पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री जयपुर आदि को आमंत्रित किया।

'भरत का अंतर्द्वंद' का संगीतमय लोकार्पण

27 फरवरी को डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की बहुचर्चित कृति 'भरत का अंतर्द्वंद' का संगीतमय लोकार्पण लाइव प्रस्तुति के माध्यम से डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की ही अध्यक्षता में श्री संजयजी दीवान, श्री अशोकजी पाटनी एवं श्रीमती नमिताजी छाबड़ा के विशिष्ट आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल व श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल के निर्देशन में निर्मित तथा प्रसिद्ध गायक श्री गौरवजी सोगानी, श्रीमती दीपशिखाजी सोगानी, श्रीमती सुप्रियाजी, श्री शिवदर्शनजी द्विवेदी द्वारा मधुर स्वर प्रदत्त इस ऑडियो का संगीत-निर्देशन दीपकजी माथुर, कंपोजिंग श्री अरुणजी दिल्ली व संयोजन पण्डित पीयूषजी शास्त्री व पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री ने किया; एतदर्थ पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट ने सभी को प्रशस्ति पत्र भेंट कर सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया।

'भरत का अंतर्द्वन्द' नामक संगीतमय काव्य को अब आप ऑडियो के किसी भी प्लेटफार्म से सुन सकते हैं एवं कॉलर ट्यून के रूप में भी इसका लाभ ले सकते हैं।

भव्य शोभायात्रा व महामस्तकाभिषेक

27 फरवरी को श्रीजी को मनोहर पालकी में विराजमान कर पंचतीर्थ जिनालय की तीन प्रशिक्षण पूर्वक शोभायात्रा संपन्न हुई। पालकी में श्रीजी को विराजमान करने का सौभाग्य श्री संजयजी कोठारी मुंबई ने प्राप्त किया। शोभायात्रा में धर्म-ध्वजा श्री अखिलजी इंदौर और धर्मचक्र आर्जव गोधा व श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ़ लेकर चले। पालकी उठाने का सर्वप्रथम सौभाग्य श्री सुलेखजी दिल्ली, श्री राहुलजी गंगवाल, श्री अशोकजी जैन व श्री भव्यजी जैन ने प्राप्त किया। सभी ने अपने द्वार पर श्रीजी का स्वागत किया एवं विद्यार्थियों ने उत्साह व भक्ति-भाव से शोभायात्रा को यादगार बनाया। शोभायात्रा के पश्चात् अलौकिक सौंदर्ययुक्त पंचतीर्थ जिनालय में स्थित समस्त 'जिनबिंबों का महामस्तकाभिषेक' हुआ।

प्रवचनसार ग्रन्थ पर विद्वत् संगोष्ठी

आचार्य कुन्दकुन्ददेव विरचित प्रवचनसार के आद्योपांत स्पष्टीकरण हेतु 'प्रवचनसार मीमांसा' विषयक संगोष्ठी संपन्न हुई। दि. 25 फरवरी को आयोजित सत्र की अध्यक्षता डॉ. संजीवकुमारजी गोधा ने की। मुख्य अतिथि श्री बसंतभाई दोशी, विशिष्ट अतिथि श्री अशोकजी पाटनी सिंगापुर के अतिरिक्त श्री सुलेखजी दिल्ली व श्री अश्विनीजी दिल्ली मंचासीन रहे। संचालन पण्डित आकाशजी शास्त्री अमायन एवं मंगलाचरण पण्डित अभिषेकजी शास्त्री देवराहा ने किया। 26 फरवरी को दोपहर में आयोजित गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ ने की। संचालन पण्डित अखिलजी शास्त्री मण्डीदीप एवं मंगलाचरण पण्डित समकितजी शास्त्री खनियांधाना ने किया।

परमागम ऑनर्स का वार्षिक समारोह

27 फरवरी को परमागम ऑनर्स कोर्स का वार्षिक समारोह एवं परीक्षा परिणाम घोषित हुआ। समारोह में विदुषी स्वानुभूतिजी द्वारा परमागम ऑनर्स की गतिविधियों के परिचय के उपरान्त डॉ. शांतिकुमारजी पाटील व डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा विद्यार्थियों की शंकाओं का समाधान किया गया।

भरत के अन्तर्द्वन्द्व की नाट्यरूप में प्रस्तुति

28 फरवरी को डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल की अध्यक्षता में 'भरत का अन्तर्द्वन्द्व' नाटक महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने प्रस्तुत किया, जिसमें निर्देशक आशुतोषजी शास्त्री सह-निर्देशक अर्पितजी शास्त्री सहित 30 विद्यार्थियों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही।

समारोह की सफलता में पण्डित सर्वज्ञजी भारिल्ल, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री, पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री एवं पण्डित आकाशजी अमायन का विशेष सहयोग रहा।

वैराग्य समाचार

उदयपुर निवासी **श्री कन्हैयालालजी टाया** का 105 वर्ष की दीर्घायु में 20 फरवरी 2022 को देहावसान हो गया। मेवाड़ की धरा पर तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में आपका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। मुंबई भूलेश्वर मंदिर के अध्यक्ष रहते हुए आपने डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल को सर्वप्रथम दशलक्षण पर्व में मुंबई आमंत्रित कर अभिनन्दन किया। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान को 1100 रूपये की राशि प्राप्त हुई है।

ब्र. यशपालजी की प्रथम पुण्यस्मृति सभा

जयपुर : यहाँ ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में रविवार 06 मार्च 2022 को सायंकाल पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के प्रकाशन मंत्री बाल ब्र. यशपालजी की प्रथम पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई।

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल व श्री सुशीलकुमारजी गोदिका की उपस्थिति में सम्पन्न इस सभा में श्री शुद्धात्मप्रकाशजी ने अन्नाजी के सरल व्यक्तित्व, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील ने प्रेरक व्यक्तित्व एवं पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने क्रान्तिकारी व्यक्तित्व की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए श्रद्धासुमन अर्पित किए।

ब्र. यशपालजी के वीडियो प्रवचन-प्रसारण के पश्चात् विद्यार्थियों में सोहम् शाह सोलापुर, सुष्मित जैन सेमारी एवं आदित्य जैन फुटेरा ने ब्र. यशपालजी के व्यक्तित्व व कर्तृत्व के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त किए इसके अतिरिक्त समकित जैन ईसागढ़ द्वारा काव्य पाठ एवं आशुतोष जैन आरोन द्वारा सेंड एनिमेशन की प्रस्तुति दी गई।

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने अन्नाजी से जुड़े अनेक प्रसंगों का स्मरण किया एवं उनके द्वारा संस्था में दिए गए योगदान की प्रशंसा करते हुए कहा कि वे करणानुयोग के विशेषज्ञ विद्वान थे एवं अध्यात्म गर्भित करणानुयोग ही उनकी विशेषता थी।

डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील ने अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा कि प्रतिवर्ष यह दिवस 'जिनवाणी कण्ठस्थ दिवस' के रूप में मनाया जाए एवं सर्वाधिक कण्ठपाठ सुनाने वाले विद्यार्थी को 'ब्र. यशपालजी श्रुत-आराधक' पुरस्कार से सम्मानित किया जाए। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संयोजन व संचालन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

समयसार रथ : टोडरमल स्मारक के परिसर में

जयपुर : यहाँ 12 मार्च 22 को देशभर में 75 स्थानों पर समयसार का शंखनाद कर तथा 25 स्थानों पर समयसार कीर्ति-स्तम्भ को स्थापित करता हुआ समयसार रथ पं. नागेशजी पिड़ावा के निर्देशन में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के द्वार पर पहुँचा।

रथ के स्वागत में श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल द्वारा संचालित सभा में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील एवं श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने ग्रंथाधिराज समयसार व आचार्य कुन्दकुन्द के महत्त्व का गुणगान किया। डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने रथ पर स्वस्तिक बनाया। ज्ञातव्य है कि रथ का संचालन पारमार्थिक ट्रस्ट व तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई द्वारा किया जा रहा है।

तृतीय वार्षिकोत्सव एवं बीस तीर्थंकर विधान

दाहोद : यहाँ श्री दिगम्बर जैन नवा तेरापंथी पंच ट्रस्ट के तत्त्वावधान में 28 फरवरी से 4 मार्च 2022 तक भगवान वासुपूज्य की प्राण-प्रतिष्ठा का तृतीय वार्षिकोत्सव बाल ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना के निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

युवा विद्वान डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा प्रातः ग्रंथाधिराज समयसार की 49वीं गाथा, दोपहर में क्रमबद्धपर्याय एवं सायंकाल संयमप्रकाश ग्रन्थ पर प्रवचन के माध्यम से धर्म प्रभावना की गई तथा डॉ. विवेकजी शास्त्री ने बीस तीर्थंकर विधान श्री राकेशजी शास्त्री व श्री वीरेन्द्रजी शास्त्री के सहयोग से किया।

इस प्रसंग पर 01 मार्च को विद्वत् निवास हेतु महेन्द्र भवन का शिलान्यास, 04 मार्च को शिखर का ध्वज-परिवर्तन हुआ। सांस्कृतिक कार्यक्रम में पाठशाला के बालक-बालिकाओं द्वारा हमारे आदर्शों पर कविता, कवि-सम्मेलन, नृत्य आदि अनेक रोचक कार्यक्रम हुए। कार्यक्रम की सफलता में श्री नितिनभाई दोशी, श्री अनन्तभाई झांझरी, श्री मिलनभाई भूता, श्री पावेसभाई दोशी, श्री शीतलभाई सर्राफ का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

समयसार मण्डल विधान सम्पन्न

अजमेर : यहाँ श्री वीतराग विज्ञान स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट के अन्तर्गत ऋषभायतन अध्यात्मधाम में 10 से 17 मार्च 2022 तक श्री समयसार महामण्डल विधान का भव्य आयोजन डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर के सान्निध्य में पण्डित समकितजी शास्त्री एवं पण्डित दिव्यांशजी शास्त्री के सहयोग से सम्पन्न हुआ।

शोभायात्रा के उपरान्त झण्डारोहण श्री नीरजजी जैन (उपमहापौर) एवं श्रीमती रूबीजी जैन (पार्षद) ने किया। पांडाल-उद्घाटनकर्ता श्री पुखराजजी पहाड़िया एवं जिनवाणी विराजमानकर्ता श्री प्रदीपजी-कुसुमजी चौधरी किशनगढ़ रहे।

इस प्रसंग पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा प्रातः समयसार, दोपहर में क्रमबद्धपर्याय तथा रात्रि में संयमप्रकाश ग्रंथ के आधार पर मार्मिक व्याख्यान हुए एवं १४ मार्च को समयसार कीर्ति-स्तम्भ स्थापित किया गया। अन्त में आभार-प्रदर्शन श्री नरेशजी लुहाड़िया ने किया एवं सम्पूर्ण कार्यक्रम श्री प्रकाशजी जैन नेतृत्व में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के लाइव प्रसारण में अनुज जैन छिन्दवाडा, अभास जैन एवं पलास जैन जबलपुर का सहयोग रहा।

विशेष व्याख्यान : ह्यूस्टन (अमेरिका) की ओर से

जैन सोसाइटी ऑफ ह्यूस्टन द्वारा द्वि-दिवसीय विशेष कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विशेष रूप से डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर द्वारा 20 फरवरी को निमित्त-उपादान एवं 21 फरवरी को आत्मा-परमात्मा विषय पर व्याख्यान हुए एवं उपस्थित श्रोताओं की विषयगत शंकाओं का समाधान भी किया गया।

सम्पूर्ण कार्यक्रम जैन सोसाइटी ऑफ ह्यूस्टन के प्रमुख श्री विनयभाई शाह के नेतृत्व एवं श्री नितिनभाई, श्री कल्पेशभाई व श्री चेतलभाई की सहभागिता में संपन्न हुआ। ज्ञात है कि इस प्रसंग पर जैन अध्यात्म अकेडमी ऑफ नॉर्थ अमेरिका के प्रमुख श्री अतुलभाई खारा ने जुलाई में लगने वाले JANNA शिविर की घोषणा भी की।

टोडरमल महाविद्यालय का सुयश

डॉ. प्रमोदजी शास्त्री शाहगढ़ को प्राकृत-अपभ्रंश एवं जैनागम विषय में आचार्य परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने हेतु जगद्गुरू रामानन्दाचार्य राज. संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित दीक्षान्त समारोह में 'गोल्ड मैडल' से सम्मानित किया गया।

पण्डित पीयूषजी शास्त्री गौरझामर ने हिंदी विषय से एवं **पण्डित नयनजी शास्त्री बरायठा** ने संस्कृत विषय से नेट की परीक्षा उत्तीर्ण करके जे.आर.एफ प्राप्त की; ज्ञात है कि संस्कृत विषय में प्रथम प्रयास में ही जे.आर.एफ लेने वाले प्रथम स्नातक हैं।

केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय नई दिल्ली द्वारा आयोजित शास्त्रीय स्पर्धा 2021-22 में **पण्डित मंथनजी शास्त्री मुम्बई** ने शास्त्रार्थ में द्वितीय पदक एवं **पण्डित पवित्रजी शास्त्री आगरा** ने सम्भाषण में प्रथम पदक प्राप्त किया; एतदर्थ हार्दिक शुभकामनाएँ।

भक्तामर विधान एवं सत्पथ सत्संग सम्पन्न

नागपुर : यहाँ 26 व 27 फरवरी 22 को सत्पथ पाठशाला के वार्षिकोत्सव के अन्तर्गत श्री भक्तामर मण्डल विधान एवं सत्पथ सत्संग का आयोजन किया गया।

26 फरवरी को पाठशाला के छात्रों द्वारा विशेष प्रस्तुतियाँ व श्री शैलेषजी सदरवालों द्वारा 'सत्पथ गीत' के उपरान्त पं. संजयजी शास्त्री कोटा ने पण्डित टोडरमलजी की कथा सुनाई। 27 फरवरी को श्रीजी की शोभायात्रा पूर्वक भक्तामर मण्डल विधान पं. संजयजी शास्त्री के निर्देशन में सम्पन्न हुआ एवं पं. विपिनजी शास्त्री ने संस्था की गतिविधियों का परिचय देते हुए आगामी योजनाएँ प्रस्तुत कीं। सम्पूर्ण कार्यक्रम श्री नरेशजी सिंघई के संयोजन एवं पण्डित विपिनजी शास्त्री के निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

आवश्यक सूचना

20 जनवरी से 26 जनवरी, 2023 तक

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न होने जा रहा है।

इस अवसर पर देश के अनेक साधर्मियों ने ढाईद्वीप जिनायतन में जिन-प्रतिमा विराजमान करने के भाव संजोये है। हम सभी से संपर्क करने का प्रयास कर रहे हैं; परन्तु कुछ लोगों का कोई संपर्क माध्यम हमारे पास ना होने से संपर्क नहीं हो रहा है।

अतः आपसे अनुरोध है कि यदि आपने ढाईद्वीप में जिन-प्रतिमा विराजमान करने हेतु वचन दिया है और अभी तक आपसे कोई संपर्क नहीं हो पाया है तो कृपया अतिशीघ्र नीचे दिए हुए नम्बर पर संपर्क कर अपना रिकॉर्ड अपडेट करा लेवें।

डॉ. विवेक शास्त्री इंदौर

मो. 98933 00691

श्री कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन शासन प्रभावना ट्रस्ट

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया

IFSC Code	:	UBIN 0544809
A/C No.	:	448001010120070
Pan No.	:	AAHTS9425Q
Contact No.	:	09893300691

R.N.I. No. 38278/83 *Postal Regd. No. JaipurCity/421/2021-23*

तत्त्व प्रचार व संस्कारों को नया आयाम देगा

ARHAM ANNUAL FEST 2022

April 14 to 17, 2022

QR CODE को गूगल लेंस से स्केन कर रजिस्टेशन करें।

ATTRACTION OF FEST

- हेरिटेज वॉक (जयपुर के प्रसिद्ध मंदिरों के दर्शन एवं पण्डित प्रवर टोडरमलजी द्वारा **हस्तलिखित मोक्षमार्ग प्रकाशक प्रतिलिपि** के दर्शन)
- जवाहर कला केंद्र में **म्यूजिक कंसर्ट**
- **धार्मिक संस्कार** के महत्त्व को देखते हुए नये रूप में नया आयोजन
- **पर्सनल टाइम विथ डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल**
- जयपुर के विश्व प्रसिद्ध **महावीर जयंती जुलूस** देखने का अवसर
- दुनियाभर की **जैन युवा प्रतिभाओं से मिलने का अवसर**
- दुनिया का पहला **JAIN YOUTH** के लिए रोचक कार्यक्रम
- अर्हं अध्यापकों व अनेक विद्वानों से मिलने का अपूर्व अवसर
- **10 वर्ष से 25 वर्ष के आयु वालों को मुख्यता**
- **फिजिकल इवेन्ट**
- **लिमिटेड सीट्स**

रजिस्ट्रेशन के लिए व्हाट्सएप करें – 8949033694

वेन्यू – टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर – 302015

सम्पादक :
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल
शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., पीएच. डी.
सह–सम्पादक :
डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय , नेट, एम. फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.
प्रकाशक एवं मुद्रक :
ब्र. यशपाल जैन, एम. ए.
द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये
जयपुर प्रिंटर्स प्रा.लि., जयपुर से
मुद्रित एवं प्रकाशित।

प्रकाशन तिथि : 21 मार्च 2022

If undelivered please return to -- **Pandit Todarmal Smarak Trust , A-4, Bapu Nagar, Jaipur - 302015**